जया पार्वती व्रत कथा PDF

प्राचीन कथा के अनुसार एक कौडिन्य नगर में वामन नाम का एक योग्य ब्राह्मण रहा करता था। उसकी पत्नी जिसका नाम सत्या था। उनके घर में किसी भी वस्तु की कोई कमी नहीं थी। वह बहुत ही धनवान थे। परंतु कोई भी संतान न होने के कारण वे बहुत ही दुखी रहते थे। एक दिन की बात है कि नारद जी उनके घर पर पधारें।

दोनों पति–पत्नी ने नारद जी की खूब सेवा की और नारद जी से अपनी समस्या का समाधान पूछा। तब नारदजी उन्हें बताते हैं कि तुम्हारे नगर के बाहर जो वन है उसके दक्षिण भाग में बिल्व वृक्ष के नीचे लिंगरूप में भगवान शिव और माता पार्वती साथ विराजमान है। यदि आप उनकी पूजा करोगे तो आपकी मनोकामना पूरी हो जाएगी। उसके बाद ब्राह्मण ने उस वन में शिवलिंग को ढूंढ कर पूर्ण विधि–विधान के साथ पूजा अर्चना की। यह क्रम निरंतर चलता रहा। क्रम को चलते चलते 5 साल बीत गए।

जब एक दिन ब्राह्मण पूजन करने के लिए फूल तोड़ रहा था तो उसको एक सांप काट लेता है। जिस वजह से ब्राह्मण वही जंगल में गिर गया। उसकी पत्नी ने काफी देर तक ब्राह्मण का इंतजार किया परंतु जब काफी देर के बाद ब्राह्मण नहीं लौटा तो वह जंगल में उसे ढूंढने के लिए जाती है। वह देखती है कि उसके पति को सांप ने काट लिया है और उसकी हालत बहुत ही खराब है। यह सब देख कर वह बहुत रोने लगी उसने वन देवता और माता पार्वती को याद किया।

जब ब्राह्मणी की पुकार वनदेवता और माता पार्वती ने सुनी तो वे वहाँ पर प्रकट हो जाते हैं। उसके बाद ब्राह्मण के मुख में अमृत डालते है जिससे ब्राह्मण को होश आ जाता है। और ब्राह्मण उठ जाता है। माता पार्वती उन्हें विजया पार्वती का व्रत रखने का सुझाव देती है। दोनों पति पत्नी ने माता पार्वती की पूजा की उनकी पूजा से प्रसन्न होकर माता पार्वती उन दोनों से एक वर मांगने के लिए

कहा ब्राह्मण माता पार्वती से संतान प्राप्ति के लिए इच्छा व्यक्त करता है और माता पार्वती के आशीर्वाद से उनके घर में एक पुत्र का जन्म होता है।

जो भी यह व्रत कथा ध्यान से सुनता है और सच्चे दिल से पूजा करता है उसे अपने जीवन में मनचाही वस्तु की प्राप्ति होती है। और किसी भी समस्या का सामना नहीं करना पड़ता।

pdfinbox.com